नई वाचा-
एक नई आराधना

''परन्तु वह समय आ रहा है, बरन अब भी है जिस में सच्चे भक्त पिता की आराधना आत्मा और सच्चाई से करेंगे, क्योंकि पिता अपने लिए ऐसे ही आराधना करनेवालों को ढूंढ़ता है। परमेश्वर आत्मा है, और अवश्य है कि उसकी आराधना करने वाले आत्मा और सच्चाई से आराधना करें'' (यूहन्ना 4:23, 24; ROV)।

पुरानी व्यवस्था के अधीन परमेश्वर की आराधना जानवरों के बलिदान पर आधारित थी, परन्तु नई व्यवस्था आत्मिक बलिदान पर बनाई गई थी। मसीह की व्यवस्था में, हमें अपने आप को क्रूस पर चढ़ाकर (रोमियों 6:4-6; गलतियों 2:20) जीवित बलिदान बनना है (रोमियों 12:1)। हमारी आराधना शब्द के पुरानेपन में नहीं बल्कि आत्मा के नयेपन में होनी चाहिए (2 कुरिन्थियों 3:6; फिलिप्पियों 3:3), जिससे आत्मिक बलिदान भेंट हो सकें। पतरस ने कहा है:

> उसके पास आकर, जिसे मनुष्यों ने तो निकम्मा ठहराया, परन्तु परमेश्वर के निकट चुना हुआ, और बहुमूल्य जीवता पत्थर है। तुम भी आप जीवते पत्थरों की नाईं आत्मिक घर बनते जाते हो, जिससे याजकों का पवित्र समाज बनकर, ऐसे आत्मिक बलिदान चढ़ाओ, जो यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर को ग्राह्य हैं (1 पतरस 2:4, 5)।

यह बलिदान मनुष्य की आत्मा की गहराई से भेंट किया गया था और मनुष्यों के होंठों से की जाने वाली महिमा है। ''इसलिए हम उसके द्वारा स्तुति रूपी बलिदान अर्थात उन होंठों का फल जो उसके नाम का अंगीकार करते हैं, परमेश्वर के लिए सर्वदा चढ़ाया करें'' (इब्रानियों 13:15)।

एक अलग बलिदान

व्यवस्था में पाप तथा दोष के प्रायश्चित के रूप में जानवर के बलिदान (लैव्यव्यवस्था 4:1-35; 5:1-19) ही भेंट नहीं किए जाते थे। मेल बलि, शपथ के रूप में, स्वेच्छा से और

धन्यवाद की भेंटों आदि को आराधना माना जाता था (लैव्यव्यवस्था 3:1-9; 7:11-34)। इसमें ''तेल से सने हुए अखमीरी फुलके, और तेल से चुपड़ी हुई अखमीरी रोटियां, और तेल से सने हुए मैदे के फुलके तेल से तर चढ़ाए'' (लैव्यव्यवस्था 7:12) जा सकते थे। परमेश्वर केवल ऐसे बलिदान ही नहीं बल्कि शुद्ध जीवन तथा पश्चात्तापी मन भी चाहता था (भजन 51:17; यशायाह 1:11-17)।

इस्राएलियों द्वारा वाचा के संदूक को यरूशलेम में ले जाते समय दाऊद ने छह कदम पर एक बैल और एक पला हुआ बछड़ा बलि करके परमेश्वर की आराधना की थी (2 शमूएल 6:13)। संदूक के तम्बू तक पहुंचने पर, उसने होम बलि और मेल बलि चढ़ाए थे (2 शमूएल 6:17)।

कुछ लोग यह कहकर कि पुराने नियम के समय परमेश्वर की आराधना ऐसे होती थी, आराधना के संगीत में नाचने और साज बजाने को सही ठहराना चाहते हैं (भजन 150:4-6)। उनका तर्क होता है: ''यदि आराधना में उसे ये बातें तब पसन्द थीं, तो अब वह उन्हें क्यों पसन्द नहीं करेगा?'' यही प्रश्न होम बलियों के बारे में पूछा जा सकता है। परमेश्वर ने उस समय आराधना के एक रूप में इनकी आज्ञा दी थी, अत: वह इन्हें अब स्वीकार क्यों नहीं करेगा?

कभी-कभी दिया जाने वाला एक उत्तर यह है कि परमेश्वर ने स्पष्ट तौर पर बता दिया है कि यीशु के अपने बलिदान भेंट करने के बाद अब किसी और बलिदान को स्वीकार नहीं किया जाता है। बाइबल बताती है कि पाप बलियां अब मान्य नहीं हैं क्योंकि यीशु ने पाप के लिए एक ही भेंट चढ़ा दी है (इब्रानियों 7:27; 9:24-28; 10:4, 8, 12, 14), परन्तु इसमें यह कहां कहा गया है कि आराधना के एक रूप में होम बलियों को एक तरफ कर दिया गया है? ये बलिदान व्यवस्था दिए जाने से पहले (उत्पत्ति 4:4; 8:20; 22:13; 31:54; 46:1; निर्गमन 18:12) और उस समय जब व्यवस्था को पूरा किया जाता था, स्वीकार्य थे। इस तथ्य का कि नई वाचा की आराधना में उनकी कहीं आज्ञा नहीं दी गई, यह अर्थ है कि वे हमारी आराधना में अब शामिल नहीं होनी चाहिए। जो सिद्धांत होम बलियों को बाहर करता है वही व्यवस्था के अधीन की जाने वाली आराधना के किसी भी रूप को बाहर करता है जो नई वाचा में शामिल नहीं है। अगले पाठ में हम कुछ आयतों पर विचार करेंगे जिनमें सिखाया गया है कि व्यवस्था अब लागू नहीं है।

एक अलग याजकाई

सांसारिक याजकों के द्वारा परमेश्वर की आराधना करने के बजाय मसीही लोग ही परमेश्वर के याजक हैं[1] (1 पतरस 2:9; प्रकाशितवाक्य 1:6; 5:18; 20:6)। हम परमेश्वर की आराधना यीशु के द्वारा कर सकते हैं जो कि हमारा एक और इकलौता मध्यस्थ है (1 तीमुथियुस 2:5)।

इब्रानियों 7:12 में याजकाई के बदलने की बात है। पुरानी व्यवस्था में तो याजक लेवी के गोत्र से होते थे (व्यवस्थाविवरण 21:5), परन्तु अब परमेश्वर के सामने मसीही लोग

याजकों के रूप में सेवा करते हैं। हम याजकों का समाज हैं (1 पतरस 2:5, 9) जिनका महायाजक यीशु है (इब्रानियों 2:17; 4:14, 15; 5:5, 10)।

> सो ऐसा ही महायाजक हमारे योग्य था, जो पवित्र, और निष्कपट और निर्मल, और पापियों से अलग, और स्वर्ग से भी ऊंचा किया हुआ हो। और उन महायाजकों की नाईं उसे आवश्यक नहीं कि प्रति दिन पहिले अपने पापों और फिर लोगों के पापों के लिए बलिदान चढ़ाए; क्योंकि उसने अपने आप को बलिदान चढ़ाकर उसे एक ही बार निपटा दिया (इब्रानियों 7:26, 27)।

एक अलग ढंग

किसी भी जगह

यीशु ने सिखाया कि आराधना अब यरूशलेम में और वहां होने वाले धार्मिक संस्कारों तक ही सीमित नहीं रहनी थी। उसने कहा कि अब आराधना आत्मा और सच्चाई से होगी (यूहन्ना 4:23, 24)। यीशु के अनुसार, परमेश्वर की आराधना में एक नये दिन का उदय हो रहा था। व्यवस्था, यरूशलेम, और वहां की जाने वाली आराधना की छाया की ओर देखने के बजाय (इब्रानियों 8:5), परमेश्वर को ग्रहण योग्य आराधना यीशु मसीह के द्वारा प्रकट सच्चाई के अनुसार होनी थी (यूहन्ना 1:17)। परमेश्वर ने अब आराधना के उन रूपों को स्वीकार नहीं करना था जो उसने इस्राएल को दिए थे।

आत्मा से

यद्यपि व्यवस्था में मन पर ज़ोर नहीं दिया गया था, परन्तु परमेश्वर की यह इच्छा रहती थी कि उसकी आराधना मन से, अर्थात मनुष्य की आत्मा की गहराई से हो। नये नियम के आराधकों को आत्मा और सच्चाई से आराधना करनी चाहिए, क्योंकि परमेश्वर ऐसे ही आराधकों को ढूंढ़ता है (यूहन्ना 4:23, 24)। यीशु द्वारा प्रयुक्त शब्द का अनुवाद ''करेंगे'' संकेत देता है कि कोई विकल्प नहीं दिया जाना था। पूरी आराधना इन मापदण्डों के अनुसार ही होनी चाहिए।

आत्मा से आराधना वह आराधना है जो मनुष्य के आत्मा से शुरू होती है और व्यक्त की जाती है। परमेश्वर की आराधना को व्यक्त करने के अन्दर के भाव की चेतना के प्रयास के बिना आराधना की भावनाएं खोखली और परमेश्वर को अस्वीकार्य हैं। वह बाहरी दिखावे अर्थात शारीरिक कार्यों में दिलचस्पी नहीं रखता है। आराधना आत्मा और मन से ही होनी चाहिए (इफिसियों 5:19)।

सच्चाई से

आराधना न केवल आत्मा से बल्कि सच्चाई से भी होनी चाहिए। सच्चाई यीशु के द्वारा

आई है (यूहन्ना 1:14, 17; 8:31, 32; 14:6; इफिसियों 4:21)। यह सच्चाई पिता की ओर से दी गई है (यूहन्ना 17:17; देखिए यूहन्ना 12:49, 50)। पवित्र आत्मा ने प्रेरितों को वह सच्चाई याद दिलाई जो उन्होंने यीशु से सुनी थी (यूहन्ना 14:26) और उन्हें सारी सच्चाई में अगुआई दी (यूहन्ना 16:13)। अब हमें मसीह में भरपूर किया जाता है (कुलुस्सियों 2:10), जिसमें बुद्धि तथा ज्ञान के सारे भण्डार छुपे हुए हैं (कुलुस्सियों 2:3)। इस कारण, परमेश्वर की आराधना में इस्तेमाल करने पर मनुष्यों की परम्पराएं व्यर्थ हो जाती हैं (मत्ती 15:7-9; मरकुस 7:6-13; कुलुस्सियों 2:8; तीतुस 1:14)।

नई वाचा की आराधना में प्रेरितों की शिक्षा, प्रार्थना (प्रेरितों 2:42) में लगे रहना, प्रभु भोज में यीशु को स्मरण करना (1 कुरिन्थियों 11:23-26), प्रभु के लिए मन से गाना (इफिसियों 5:19; कुलुस्सियों 3:16) और जैसा हमने मन में ठाना हो उसी के अनुसार चंदा देना शामिल है (2 कुरिन्थियों 9:7)। आराधना के बाहरी ढंग के ये रूप परमेश्वर को तभी तक स्वीकार्य हैं जब उसकी आराधना करने के लिए वे आत्मा से जुड़ते हैं।

बिना दशमांश के

व्यवस्था के अधीन, दिया जाने वाला चंदा दशमांश अर्थात हर प्रकार की आमदनी का दसवां भाग होता था। लोगों को यह चंदा स्वेच्छा से भेंट के रूप में नहीं बल्कि एक दायित्व के रूप में देना होता था। दशमांश लेवी के गोत्र की सहायता के लिए दिया जाता था।

> फिर मिलापवाले तम्बू की जो सेवा लेवी करते हैं उसके बदले मैं उनको इस्राएलियों का सब दशमांश उनका निज भाग कर देता हूं। और भविष्य में इस्राएली मिलापवाले तम्बू के समीप न आएं, ऐसा न हो कि उनके सिर पर पाप लगे, और वे मर जाएं। परन्तु लेवी मिलापवाले तम्बू की सेवा किया करें; यह तुम्हारी पीढ़ियों में सदा की विधि ठहरे; और इस्राएलियों के बीच उनका कोई निज भाग न होगा। क्योंकि इस्राएली जो दशमांश यहोवा को उठाई हुई भेंट करके देंगे, उसे मैं लेवियों को निज भाग करके देता हूं, इसलिए मैंने उनके विषय में कहा है, कि इस्राएलियों के बीच कोई भाग उनको न मिले (गिनती 18:21, 24)।

बंटवारे के समय लेवी के गोत्र को भूमि मीरास में नहीं मिली थी (गिनती 18:20)। इसलिए उनके पास निर्वाह के लिए दशमांश को छोड़ कोई और साधन नहीं था। ये दशमांश लेवियों के निर्वाह के लिए इस्राएलियों द्वारा दिए जाने थे (गिनती 18:26)।

व्यवस्था दिए जाने से पहले, इब्राहीम ने शालेम के राजा मेल्कीसेदेक को दशमांश दिया था (उत्पत्ति 14:20)। याकूब ने भी परमेश्वर से प्रतिज्ञा की थी कि वह परमेश्वर की ओर से मिलने वाली हर आशीष का दशमांश उसे देगा (उत्पत्ति 28:20-22)। बेशक इन लोगों ने प्रभु को दशमांश दिया था और व्यवस्था भी यह मांग करती थी, परन्तु नई वाचा ने हम पर दशमांश देने पर पाबंदी नहीं लगाई है। हमें वैसे ही चंदा देना चाहिए जैसे हमें आशीष मिली है (1 कुरिन्थियों 16:2) अर्थात हमें अपनी आमदनी के अनुसार देना चाहिए।

हमें चंदा अपने मन से हर्षित होकर देना चाहिए (2 कुरिन्थियों 9:7)।

सारांश

नई वाचा में उस व्यवस्था की तरह नियम नहीं हैं जो इस्राएलियों को दी गई थी। परमेश्वर ने हमें ज़िम्मेदारियां तो दी हैं, परन्तु उसने यह नहीं कहा कि हमें कितना अधिक या कितना कम देना चाहिए। हमें अपने मन में तय करना है कि हम अच्छी से अच्छी सेवा कैसे दे सकते हैं। यदि हम कम सेवा करेंगे, तो यह इसलिए है कि हमने अपने आपको सीमित कर लिया है; यदि हम अधिक सेवा करते हैं, तो यह इसलिए है क्योंकि हम परमेश्वर की अधिक सेवा करना चाहते हैं। हमारा न्याय (रोमियों 2:6; 2 कुरिन्थियों 5:10; 1 पतरस 1:17) उसी के आधार पर होगा जो हमारा मन करने के लिए हमें प्रेरित करता है (1 कुरिन्थियों 4:5)। परमेश्वर हमारे मनों को जांचता (1 थिस्सलुनीकियों 2:4) और हमारे कामों के द्वारा हमारा न्याय करता है (रोमियों 2:6; 1 पतरस 1:17)।

परमेश्वर ने हमारे कामों के लिए मापदण्ड ठहरा दिए हैं, जैसा कि (प्रेरितों 15:29) से स्पष्ट है। परन्तु जब यह बात आती है कि हमें कितना देना चाहिए, कितना गाना चाहिए, वचन का कितना अध्ययन करना चाहिए, कितनी प्रार्थना करनी चाहिए, दूसरों की आवश्यकता में कितनी सहायता करनी चाहिए, या परमेश्वर की कोई और सेवा करनी चाहिए, तो हमारे मन परमेश्वर के वचन की अगुआई में हमारे ऊपर शासन करें। हमें वह स्वतन्त्रता है जो व्यवस्था के अधीन लोगों को नहीं थी।